

---

.. govindAShTakam by Swami Brahmananda ..

॥ गोविन्दाष्टकं स्वामिब्रह्मानन्दकृतम् ॥

Document Information

---

Text title : govindAShTakam svAmibrahmAnandakRitam  
File name : govindAShTakambrahmAnanda.itx  
Category : aShTaka  
Location : doc\_vishhnu  
Language : Sanskrit  
Subject : philosophy/hinduism/religion  
Transliterated by : Malleswara Rao Yellapragada malleswararaoy  
at yahoo.com  
Proofread by : Malleswara Rao Yellapragada and Proofread by ksr  
ramachandran ramachandran\_ksr at yahoo.ca  
Description-comments : BrihatstotraratnAkara  
Latest update : November 24, 2012  
Send corrections to : Sanskrit@cheerful.com  
Site access : <http://sanskritdocuments.org>

---

This text is prepared by volunteers and is to be used for personal study and research. The file is not to be copied or reposted for promotion of any website or individuals or for commercial purpose without permission.

---

Please help to maintain respect for volunteer spirit.

---

August 2, 2016

*sanskritdocuments.org*

---

## ॥ गोविन्दाष्टकं स्वामिब्रह्मानन्दकृतम् ॥

श्री गणेशाय नमः ॥  
चिदानन्दाकारं श्रुतिसरससारं समरसं  
निराधाराधारं भवजलधिपारं परगुणम् ।  
रमाग्रीवाहारं ब्रजवनविहारं हरनुतं  
सदा तं गोविन्दं परमसुखकन्दं भजत रे ॥ १ ॥

महाम्भोदिस्थानं स्थिरचरनिदानं दिविजपं  
सुधाधारापानं विहगपतियानं यमरतम् ।  
मनोज्ञं सुज्ञानं मुनिजननिधानं ध्रुवपदम्  
सदा तं गोविन्दं परमसुखकन्दं भजत रे ॥ २ ॥

धिया धीरैर्ध्येयं श्रवणपुटपेयं यतिवरैः  
महावाक्चैज्ञेयं त्रिभुवनविधेयं विधिपरम् ।  
मनोमानामेयं सपदि हृदि नेयं नवतनुं  
सदा तं गोविन्दं परमसुखकन्दं भजत रे ॥ ३ ॥

महामायाजालं विमलवनमालं मलहरं  
सुवालं गोपालं निहतशिशुपालं शशिमुखम् ।  
कलातीतं कालं गतिहतमरालं मुररिपुं  
सदा तं गोविन्दं परमसुखकन्दं भजत रे ॥ ४ ॥

नभोबिम्बस्फीतं निगमगणगीतं समगतिं  
सुरौघे सम्प्रीतं दितिजविपरीतं पुरिशयम् ।  
गिरां पन्थातीतं स्वदितनवनीतं नयकरं  
सदा तं गोविन्दं परमसुखकन्दं भजत रे ॥ ५ ॥

परेशं पद्मेशं शिवकमलजेशम् शिवकरं  
द्विजेशं देवेशं तनुकुटिलकेशं कलिहरम् ।  
खगेशं नागेशं निखिलभुवनेशं नगधरं  
सदा तं गोविन्दं परमसुखकन्दं भजत रे ॥ ६ ॥

रमाकान्तं कान्तं भवभयलयान्तं भवसुखं  
दुराशान्तं शान्तं निखिलहृदि भान्तं भुवनपम् ।  
विवादान्तं दान्तं दनुजनिचयान्तं सुचरितं  
सदा तं गोविन्दं परमसुखकन्दं भजत रे ॥ ७ ॥

जगज्ज्येष्ठं श्रेष्ठं सुरपतिकनिष्ठं क्रतुपतिं  
बलिष्ठं भूयिष्ठं त्रिभुवनवरिष्ठं वरवहम् ।  
स्वनिष्ठं धार्मिष्ठं गुरुगुणगरिष्ठं गुरुवरं

सदा तं गोविन्दं परमसुखकन्दं भजत रे ॥ ८ ॥


गदापाणोरेतद्दुरितदलनं दुःखशमनं  
विशुद्धात्मा स्तोत्रं पठति मनुजो यस्तु सततम् ।  
स भुक्त्वा भोगौघं चिरमिह ततोऽपास्तवृजिनो  
वरं विष्णोः स्थानं व्रजति खलु वैकुण्ठभुवनम् ॥

॥ इति श्री परमहंस स्वामि ब्रह्मानन्द विरचितं  
श्री गोविन्दाष्टकं सम्पूर्णम् ॥

---

Encoded and proofread by YV Malleswara Rao malleswararao@yahoo.com  
Proofread by ksr ramachandran ramachandran\_ksr at yahoo.ca

——  
.. govindAShTakam by Swami Brahmananda ..  
was typeset on August 2, 2016

——  
Please send corrections to [sanskrit@cheerful.com](mailto:sanskrit@cheerful.com)

